

प्रक्षाल पाठ

(डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल कृत)

(दोहा)

भक्तिभाव से हम करें जिन प्रतिमा प्रक्षाल।

अरे विकारी भाव का हो जावे प्रक्षाल॥ १ ॥

दिन का शुभ आरंभ हो चित्त रहे निर्भ्रान्त^१।

प्रतिमा के प्रक्षाल से मन हो जावे शान्त॥ २ ॥

(हरिगीतिका)

यद्यपि इस काल में अरहंत जिन उपलब्ध ना।

किन्तु हमारे भाग्य से जिनबिंब तो उपलब्ध हैं॥

जिनबिंब का प्रक्षाल पूजन और दर्शन भाव से।

जो भाग्यशाली करें प्रतिदिन भाव से अति चाव से॥ ३ ॥

वे भाग्यशाली भव्य निज हित कार्य में नित रत रहें।

आपके गुणगान वे नित निरन्तर करते रहें॥

निज आतमा को जानकर वे शीघ्र ही भव पार हों।

निज आतमा का ध्यान धर वे भवजलधि से पार हों॥ ४ ॥

जिसतरह समव-शरण में अरहंत जिन विद्यमान हैं।

और उनका इस जगत में उच्चतम स्थान है॥

व्यवहार होता जिसतरह का अरे उनके सामने।

बस उसतरह की विनय हो जिनमूर्तियों के सामने॥ ५ ॥

यदि मूर्तियाँ हों प्रतिष्ठित स्थापना निक्षेप से।

अरहंत सम ही पूज्य हैं जिनमार्ग में व्यवहार से॥

अरे कृत्रिम-अकृत्रिम जिनबिंब जितने लोक में।

वे पूज्य हैं शत इन्द्र कर जिनशास्त्र के आलोक में॥ ६ ॥

अति विनयपूर्वक बिंब का प्रक्षाल होना चाहिये।

अर दिवस में प्रत्येक दिन इकबार होना चाहिये॥

१. जिसमें कोई सन्देह या भ्रम न हो।

स्वस्थ तन-मन स्वच्छ पट अर सावधानी पूर्वक।
 सद्भाव से ही पुरुष को प्रक्षाल करना चाहिये॥ ७ ॥
 प्रत्येक नर-नारी अरे पूजन करे प्रत्येक दिन।
 प्रक्षाल तो बस एक जन इकबार ही दिन में करे॥
 प्रक्षाल पूजन अंग ना प्रत्येक को अनिवार्य ना।
 प्रक्षाल तो इक बिंब का इक बार होना चाहिये॥ ८ ॥
 छवि वीतरागी शान्त मुद्रा कही है जिनदेव की।
 जिनमूर्ति की भी शान्त मुद्रा वीतरागी छवि कही॥
 'जिनमूर्तियाँ हों मुस्कुराती' - कभी हो सकता नहीं।
 और हंसना वीतरागी भाव हो सकता नहीं॥ ९ ॥
 जब वीतरागी जिनवरों का न्हवन हो सकता नहीं।
 एवं दिगम्बर मुनिवरों का न्हवन हो सकता नहीं॥
 जब मुनिवरों के मूलगुण में एक गुण अस्नान है।
 तब प्रतिष्ठित मूर्तियों का न्हवन होवे किस तरह? ॥ १० ॥
 बस इसलिये जिनमूर्तियों को स्वच्छ रखने के लिये।
 और अपनी भावना को व्यक्त करने के लिये॥
 अरे प्रासुक नीर से प्रक्षाल करना चाहिये।
 न्हवन ना अभिषेक ना प्रक्षाल होना चाहिये॥ ११ ॥
 जिनबिंब का स्पर्श महिला वर्ग कर सकता नहीं।
 जिनबिंब का प्रक्षाल महिला वर्ग कर सकता नहीं॥
 दिगम्बर जिनबिंब से सम्पूर्ण महिला वर्ग को।
 एक सीमा तक सुनिश्चित दूर रहना चाहिये॥ १२ ॥
 क्योंकि ये जिनबिंब जिनवरदेव के प्रतिबिंब हैं।
 वीतरागी सर्वज्ञानी देव के ही बिंब हैं॥
 उन बिंब का जिनबिंब का अति हर्ष से उल्लास से।
 प्रक्षाल सब जन कर रहे अत्यन्त निर्मल भाव से॥ १३ ॥
 जिनबिंब का प्रक्षाल जो जन करें निर्मलभाव से।
 और पूजन करें प्रतिदिन भाव से अति चाव से॥